بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-31.03.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

# हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विवेक पूर्ण कथनों की रोशनी में क़ुर्आन करीम की श्रेष्टता, महत्ता, स्तर एवं महानता का बयान।

## हर अहमदी को हर एक उपद्रव से बचाने के लिए तथा सुधरने में अयोग्य लोगों को इबरत का निशान बनाने के लिए विशेष दुआओं की तहरीक।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 31 मार्च 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

**امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ**

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आजकल हम रमज़ान के महीने से गुज़र रहे हैं। यह ऐसा महीना है जिसमें एक आध्यात्मिक वातावरण बन जाता है। रोज़ों के साथ इबादतों की ओर अधिक ध्यान होता है। क़ुर्आन पढ़ने तथा सुनने की ओर ध्यान होता है। रोज़ों का वास्तविक लाभ उठाना है तो क़ुर्आन करीम पढ़ने की ओर अधिक ध्यान होना चाहिए। रमज़ान का क़ुर्आन करीम के साथ विशेष सम्बंध है। अल्लाह तआला क़ुर्आन करीम में फ़रमाता है- شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْٓ اُنْزِلَ فِیْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ अर्थात- रमज़ान का महीना वह महीना है जिसमें क़ुर्आन करीम नाज़िल किया गया, वह क़ुर्आन जो समस्त मनुष्यों के लिए मार्ग दर्शक बनाकर भेजा गया है।

कुछ विश्वस्त रिवायतें भी कहती हैं कि 24 रमज़ान को आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर पहली वह्यी अवतरित हुई। हर रमज़ान में जिब्रईल अलैहिस्सलाम आपके साथ क़ुर्आन करीम का दौर पूरा किया करते थे तथा अन्तिम रमज़ान में दो बार यह दौर पूरा हुआ। हमें भी इस महीने में विशेष रूप से क़ुर्आन करीम को पढ़ने, इसकी व्याख्या पढ़ने तथा सुनने की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। एम टी ए पर भी क़ुर्आन करीम का दर्स आता है उसे भी सुनना चाहिए। क़ुर्आन करीम के साथ साथ इसका अनुवाद एवं व्याख्या भी पढ़ेंगे तो तब ही उन आदेशों के महत्त्व को समझ सकते हैं जो इसमें बयान हुए हैं, इन्हें अपने जीवन का

अंश बना सकते हैं, अपने जीवन को क़ुर्आनी शिक्षाओं के अनुसार ढाल सकते हैं तथा अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को ग्रहण करने वाले बन सकते हैं। अतः यदि हमने रमज़ान का वास्तविक लाभ पाना है तो हमें क़ुर्आन करीम की तिलावत तथा इस पर विचार करने की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों को बार बार पढ़ने की आवश्यकता है ताकि हम उचित रंग में क़ुर्आन करीम की शिक्षाओं का बोध प्राप्त कर सकें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला की हिकमतें तथा आदेश दो प्रकार के होते हैं- कुछ स्थाई एवं सदैव के लिए होते हैं तथा कुछ निश्चित समय के लिए अर्थात सामयिक आवश्यकताओं के कारण अवतरित होते हैं, यद्यपि इनमें भी अपने अपने स्तर पर स्थाईत्व होता है। उदाहरणतः यात्रा के समय नमाज़ अथवा रोज़े के विषय में पृथक आदेश हैं तथा सामान्य अवस्था के समय पृथक आदेश हैं। यात्रा के समय नमाज़ को जमा करने अथवा क़सर (सामान्य नमाज़ों से छोटी) करने की आज्ञा है जबकि सामान्य अवस्था में पूरी पढ़नी है। आप अलै. फ़रमाते हैं कि तौरेत और इंजील के आदेश अस्थाई आवश्यकताओं के अनुसार थे और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो शरीअत और किताब लेकर आए थे वह स्थाई एवं निरन्तर जारी रहने वाली शरीअत है। इसमें जो कुछ बयान किया गया है वह सम्पूर्ण एवं परिपूर्ण है। क़ुर्आन शरीफ़ निरन्तर स्थाई विधान है तथा तौरेत व इंजील, यदि क़ुर्आन शरीफ़ न भी आता तब भी निरस्त हो जातीं क्यूँकि वे स्थाई एवं निरन्तर विधान नहीं थीं। जबकि क़ुर्आन करीम की शिक्षा सम्पूर्ण तथा आदेश एवं मार्ग दर्शन हर एक युग के लिए हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने आने का उद्देश्य तथा क़ुर्आन करीम की पूर्ण शरीअत के बारे में फ़रमाते हैं कि मेरी नियुक्ति का मुख्य कारण तथा मेरे आने का लक्ष केवल इस्लाम का नवीनीकरण एवं समर्थन है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर शरीअत एवं नबुव्वत का ख़ातमा हो चुका है, अब कोई शरीअत नहीं आ सकती, क़ुर्आन करीम ख़ातमुल कुतुब है इसमें अब एक बिन्दु अथवा मात्रा को कम करने अथवा बढ़ाने की अनुमति नहीं है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कृपाएँ एवं बरकतें और क़ुर्आन शरीफ़ की शिक्षा एवं मार्ग दर्शन के फलों का समापन नहीं हो गया, वे हर ज़माने के लिए निरन्तर शुद्ध उपलब्ध हैं तथा इन्हीं कृपाओं एवं बरकतों के प्रमाण के लिए ख़ुदा तआला ने मुझे खड़ा किया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला से ज्ञान प्राप्त करके सबको सम्बोधित करते हुए फ़रमाया- قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا (सूरः अलआराफ़-159) तू कह दे कि ऐ इंसानो! निःसन्देह मैं तुम सबकी ओर अल्लाह का रसूल हूँ। इस लिए आवश्यक था कि क़ुर्आन शरीफ़ उन शिक्षाओं में व्यापक होता जो समय समय पर जारी हो चुकी थीं और उन समस्त सच्चाईयों को अपने अन्दर रखता जो आसमान से विभिन्न नबियों के माध्यम से धरती के निवासियों को पहुंचाई गईं थीं। क़ुर्आन करीम के सम्मुख समस्त मानव जाति थी न कि कोई विशेष जाति एवं देश तथा ज़माना। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अल्लाह तआला के आदेश से यह घोषणा कि मैं सब दुनिया की तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ, यह इस बात का भी प्रमाण है कि क़ुर्आन करीम पूरे विश्व के लिए मार्ग दर्शन का साधन है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- क़ुर्आन शरीफ़ हिकमत है तथा स्थाई शरीअत है तथा सारी शिक्षाओं का भंडार है। इस तरह पर क़ुर्आन शरीफ़ का पहला चमत्कार उच्च स्तर की शिक्षा है और दूसरा चमत्कार इसकी महान भविष्य वाणियाँ हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मक्का निवास का पूरा जीवन भविष्य वाणियों से भरा हुआ है फिर तेरह सौ साल बाद स्थापित होने वाले सिलसिले की तथा उस समय के संकेतों एवं निशानियों की भविष्य वाणियाँ कैसी महान एवं अद्वित्तीय हैं अर्थात मसीह मौऊद अलै. के ज़माने की भविष्य वाणियाँ, और अभी तक इस शान से पूरी हो रही हैं कि दुनिया की कोई किताब इन भविष्य वाणियों का मुक़ाबला नहीं कर सकती। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि क़ुर्आन करीम में कई स्थानों पर चेतावनी है कि बुद्धि, चिंतन एवं सूझ बूझ से काम लिया जाए। क़ुर्आन मजीद तथा अन्य पुस्तकों में यही अन्तर है तथा किसी किताब ने अपनी शिक्षा को बुद्धि, चिंतन एवं स्वतंत्र मतभेद के आगे डालने का साहस नहीं किया। क़ुर्आन शरीफ़ एक सुरक्षित किताब है, अल्लाह तआला फ़रमाता है कि निःसन्देह यह एक पतिष्ठित क़ुर्आन है इसका अस्तित्व केवल काग़ज़ों तक ही सीमित नहीं बल्कि वह एक छुपी हुई किताब में है जिसको प्राकृतिक ग्रन्थ कहते हैं। इसकी शिक्षाएँ कथा कहानी नहीं जो मिट जाए अपितु जो इसे समझेगा तथा इसके अनुसार कर्म करेगा वह अल्लाह तआला की कृपाओं को प्राप्त करेगा। इसके प्रभाव तथा इसकी गहराई पवित्र आत्माओं पर ही खुलती है तथा इसके लिए दिव्य आत्माओं की संगत से लाभान्वित होने की आवश्यकता है। इस ज़माने में यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ही हैं जिन्होंने अल्लाह तआला से ज्ञान प्राप्त करके जो बयान फ़रमाया उसको हमें देखना तथा विचार करना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि क़ुर्आन करीम का नाम ज़िक्र रखा गया है इसलिए कि वह इंसान की भीतरी शरीअत याद दिलाता है जो इंसान के अन्दर विभिन्न शक्तियों के रूप में रखी हैं। विनम्रता, बलिदान, शौर्य, आधिपत्य, प्रकोप तथा धैर्य इत्यादि अर्थात जो भीतरी प्रकृति रखी थी क़ुर्आन ने उसे याद दिलाया है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि क़ुर्आन पर चिंतन करो, विचार करो, इसके अनुसार कर्म तुम्हें मानव प्रकृति के उच्चतर स्तर दिखा देगा। अतः इस दृष्टि से हमें क़ुर्आन करीम पढ़ना एवं समझना चाहिए। आजकल स्वतंत्रता के नाम पर बच्चों तथा बड़ों के बुद्धि को जो प्रदषित किया जा रहा है उससे भी हम बच सकेंगे। यदि हम जमाअती लिट्रेचर तथा क़ुर्आन करीम की तफ़सीर पढ़ेंगे तो माता पिता बच्चों के सवालों के जवाब भी दे सकेंगे। अब ज़माना आ गया है जिसके बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पेशगोई फ़रमाई थी कि लोग क़ुर्आन पढ़ेंगे परन्तु उनके कंठ से नीचे क़ुर्आन न उतरेगा। यही हम देखते हैं के असंख्य क़ारी हैं, असंख्य क़ुर्आन पढ़ने वाले हैं परन्तु कर्म उसके अनुसार कोई नहीं। काश, मुसलमान बुद्धि से काम लें तथा उस व्यक्ति की ओर ध्यान करें जिसे ख़ुदा तआला ने भेजा है, उसकी बात सुनें, अपनी भीतरी दशा को देखें, ज़माने की आवश्यकता देखें, मुसलमानों की सामान्य अवस्था को दखें, केवल प्रत्यक्ष फ़त्वों पर ज़ोर देकर इस्लाम को बदनाम करने की कोशिश न करें, क़ुर्आन करीम की वास्तविकता को समझें। अतएव हम अहमदियों को हर समय आत्म निरीक्षण करते रहना चाहिए कि हम किस हद तक क़ुर्आन करीम की शिक्षा के यथार्थ को समझते हुए तथा इसके अनुसार कर्म करने का प्रयास

करते हैं अथवा कर रहे हैं। आजकल सोशल मीडिया पर कुछ छाटे छोटे प्रोग्राम अथवा किलिप से पता चलता है कि लोगों को इस्लाम की मूल शिक्षा एवं इतिहास का ही पता नहों, बस मौलवी के कहने पर रिसालत की प्रतिष्ठा अथवा सहाबियों रज़ी. के नाम पर जमाअत के विरुद्ध नारे लगाने तथा हानि पहुंचाने का प्रयत्न है। बंगला देश से किसी ने मुझे लिखा कि जब लजूल आया तथा उन्होंने हमला किया तो एक लड़का पत्थर मार रहा था। हमारे एक अहमदी ने कहा कि क्या यह क़ुर्आन में लिखा है? क्या यह इस्लाम की शिक्षा है? हम तो कलमा पढ़ने वाले हैं, उसने तुरन्त पत्थर नीचे फेंक दिया। अतः ऐसे लोग मौलवियों के जोश दिलाने पर काम करने लग जाते हैं, अल्लाह तआला इन उपद्रवियों के उपद्रव से हमें सुरक्षित रखे तथा हमें यह सामर्थ्य प्रदान करे कि हम इस रमज़ान में भी तथा बाद में भी क़ुर्आन करीम को समझने, सीखने तथा अमल करने वाले हों।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- रमज़ान में दुआओं की ओर भी विशेष ध्यान दें। अल्लाह तआला हर जगह अहमदी को हर उपद्रव से बचाए और अल्लाह तआला की दृष्टि में जो सुधरने में अयोग्य हैं उनको इबरत का निशान बनाए ताकि दूसरे लोग अल्लाह तआला के आदेशानुसार कर्म करने वाले बान सकें। दुनिया के लिए सामान्य रूप में भी दुआ करें, अल्लाह तआला युद्ध के विनाश से दुनिया को बचाए, आमीन।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने मौलाना मुनव्वर अहमद ख़ुर्शीद साहब मुबल्लिग़, इक़बाल अहमद मुनीर साहब मुरब्बी सिलसिला ऑफ़ पाकिस्तान के देहान्त पर उनके सद्वर्णन तथा उनकी जमाअती सेवाओं के वर्णन के बाद फ़रमाया- तीसरा वर्णन है सय्यदा नुसरत जहाँ बेगम साहिबा पतनी मियाँ अब्दुल अज़ीम साहब दर्वेश मरहूम क़ादियान का, दर्वेशी क ज़माने में उड़ीसा से शादी होकर आने वाली पहली महिला थीं। मरहूमा ने अपने पति के साथ दर्वेशी का दौर धैर्य एवं संतोष के साथ व्यतीत किया। रोज़ा और नमाज़ की अत्यंत नियमबद्ध, दुआएँ करने वाली, नेक एवं निष्ठावान महिला थीं। नियमानुसार तिलावत करने वाली तथा क़ुर्आन करीम दूसरों को पढ़ाने वाली थीं, असंख्य बच्चों तथा महिलाओं को क़ुर्आन करीम पढ़ना सिखाया, मानव सेवा की भावना विशेष थी। क़ादियान में महिलाओं को कफ़न पहनाने और दफ़न करने के अवसर पर बड़ी सेवा किया करती थीं। ख़लीफ़ः वक़्त से विशेष सम्बंध था। उनके परिजनों में चार बेटे और एक बेटी हैं। ख़ुर्शीद अनवर साहब की दूसरी माता जी थीं तथा दोस्त मुहम्मद शाहिद साहब मरहूम अहमदियत के इतिहासकार की चाची थीं। अल्लाह तआला इनसे मग़फ़िरत और रहम का सलूक फ़रमाए, दर्जे बुलन्द करे, नमाज़ के बाद मैं इनका जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाउंगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

**हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652**

**टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131**